



# भारत का विद्युत पत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 115]

नई दिल्ली, सोमवार, अगस्त 1, 1994/श्रावण 10, 1916

No. 115] NEW DELHI, MONDAY, AUGUST 1, 1994/SRAVANA 10, 1916

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 1 अगस्त, 1994

मा० 3/4/94—पञ्चिक.—राष्ट्रपति को यह जानकार अस्थात तुङ्ख हुआ है कि 9 जुलाई, 1994 को लगभग 9.30 बजे प्रातः पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल और संघ राज्य भेव चण्डीगढ़ के प्रशासक, श्री सुरेन्द्र नाथ की एक तुङ्खद विभान दुर्घटना में मौत हो गई। इस दुर्घटना में उनकी पत्नी, एक पुत्र तथा एक पुत्री, दामाव और पुत्रवधू के प्रलापा उनके चार नारी-पोतों की भी मृत्यु हो गई। श्री सुरेन्द्र नाथ की मौत से भारत ने एक ऐसे योग्य तथा कृशन लोक सेवक और विशिष्ट प्रशासक को खो दिया है जिसने विभिन्न पदों पर रहते हुए देश की समर्पण, निष्ठा और विशिष्टता के साथ सेवा की थी।

2. लाहौर में 2 सितम्बर, 1926 को जन्मे श्री सुरेन्द्र नाथ ने मन् 1950 में भारतीय पुलिस सेवा में प्रवेश किया। उन्हें अपने बैच का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी जीपिन किया गया था जिसके परिणामस्वरूप उन्हें “मोर्ड ऑफ ऑनर” से सम्मानित किया गया। अपनी सेवा के प्रारंभिक वर्षों में उन्होंने मुख्यतः पंजाब तथा अल्प अवधि के लिए दिल्ली में सेवा की। मन् 1964 में उन्हें जम्मू और कश्मीर में तैनात किया गया। वहाँ वे अगले 10 वर्षों तक कार्यरत रहे। विणेय सौर पर 1965 तथा 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान उन्होंने राज्य की कुछ जटिल समस्याओं का दक्षनायूर्के मामान किया। अम्मू और कश्मीर में सेवा करने के पश्चात् उनकी नियुक्ति मिजोरम सरकार के मुख्य सचिव के पद पर उस समय

की गई थी जब वहाँ विद्रोह की समस्या अपने चरमोकर्त्त्व पर थी। उन्हें सचिव के रूप में अपने 4 वर्षों के बार्य-काल में उन्होंने विद्रोहकी समस्या पर काथु पाने में सफलता प्राप्त की। मिजो नेशनल फॉट के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर करने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई थी जिसके कारण विद्रोह की समस्या था खात्मा हो गया था।

3. स्थानीय श्री मुरेन्द्र नाथ ने 5 वर्षों से अधिक समय तक केन्द्रीय औद्योगिक नुस्खा बल में पहले महानिरीक्षक के पद पर तथा बाद में महानिरीक्षक के पद पर भी सेवा की। केन्द्रीय औद्योगिक नुस्खा बल के वे प्रथम महानिरीक्षक थे। मन् 1984-85 के दौरान उन्होंने पंजाब के राज्यपाल के मलाहकार के पद पर सेवा की। इसी अवधि के दौरान राजीव-लोंगोबाल समझौता हुआ। इसमें, 1985 से अगस्त, 1991 तक वे संघ लोक सेवा आयोग के नदस्य थे।

4. श्री सुरेन्द्र नाथ को 7 अगस्त, 1991 से पंजाब का राज्यपाल तथा संघ राज्य भेव चण्डीगढ़ का प्रशासक नियुक्त किया गया था। उन्होंने ऐसे समय में अपना कार्य-भार संभाला था जब इस उपडब्ल-प्रस्त राज्य में राष्ट्रपति शासन लाय था। धोरे-धीरे उन्होंने पंजाब में सामान्य स्थिति बहाल करने में महायाता की। उन्होंने के प्रधार्णों के परिणामस्वरूप पंजाब में 1992 में लोकदांतिक रूप से निर्वाचित संस्कार बनाना संभव हो सका। 1 नवम्बर, 1993 को उन्हें हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल का अनिवार्य दायित्व सौंपा गया था। 1993 से यह दूसरा अवधि था उन्हें यह अतिरिक्त दायित्व सौंपा गया था। इसके पूर्व जनवरी-फरवरी, 1993 में हिमाचल प्रदेश के नक्सानीन राज्यपाल के त्यागपत्र के बाद उन्हें यह दायित्व सौंपा गया था।

5. श्री सुरेन्द्र नाथ को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक तथा उत्कृष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति के पुरस्कार सेवक से सम्मानित किया गया था। उनकी लुचियों में विविधता थी जिनमें संघीत से लेकर सुलनात्मक घर्में का समावेश था। हमारे प्राचीन ग्रंथों, विशेषकर सिख गुरुओं के उपदेशों को उन्होंने आत्मसात् कर लिया था। उन्होंने गुरु गोविन्द सिंह जी के "जाप साहिब" का अन्तर्जी स्पान्तरण किया था।

6. श्री सुरेन्द्र नाथ को दुःख मृत्यु से देश को अपूरणीय ध्वनि पहुंची है। उन्हें उनकी समर्पित तथा तिम्मार्थ लोक सेवा, विशेषकर पंजाब राज्य में की गई सेवा के लिए संखेव याद किया जाएगा।

के० प्रद्मनाभाया, गृह सचिव

#### MINISTRY OF HOME AFFAIRS

#### NOTIFICATION

New Delhi, the 1st August, 1994

No. 3/4/94-Public.—The President has learnt with the deepest regret of the death on July 9, 1994, at about 9.30 A.M. of Shri Surendra Nath, Governor of Punjab and Himachal Pradesh, and the Administrator of the Union Territory of Chandigarh, in a tragic plane crash, in which his wife, a son and a daughter, son-in-law and daughter-in-law, and four grandchildren also died. In the death of Shri Surendra Nath, India has lost an able and trusted public servant and a distinguished administrator who had served his country in various positions with dedication, devotion and distinction.

2. Born on 2nd September, 1926, in Lahore, Shri Surendra Nath joined the Indian Police Service in 1950. He was rated as the best all-round officer of his batch and was awarded the Sword of Honour. During the initial years of his service, he served mainly in Punjab, and for a short while in Delhi. In 1964, he was posted to the State of Jammu & Kashmir, where he remained for the next 10 years. He handled skillfully some of the complex problems of that State especially during the two Indo-Pak Wars of 1965 and 1971. After his

service in the State of Jammu & Kashmir, he was appointed as Chief Secretary to the Government of Mizoram at a time when insurgency in that State had reached a peak point. During his 4 years as Chief Secretary, he was able to successfully curb insurgency. He was instrumental in the signing of an Accord with the Mizo National Front which put an end to insurgency.

3. Late Shri Surendra Nath also served in the Central Industrial Security Force for more than 5 years, first as Inspector-General, and then as Director-General. He was the first Director-General of the Central Industrial Security Force. He served as Adviser to the Governor of Punjab during 1984-85. It was during this period that the Rajiv-Longowal Accord was signed. From December 1985 to August 1991 he was a Member of the Union Public Service Commission.

4. Shri Surendra Nath was appointed Governor of Punjab and the Administrator of the Union Territory of Chandigarh with effect from August 7, 1991. He joined at a time when the strife-torn State was under President's rule. Gradually and steadily he helped restore normally in Punjab. It was largely due to his efforts that it became possible to have a democratically elected Government in Punjab in 1992. In November 1993, he was given the additional charge of Governor of Himachal Pradesh. This was the second time in 1993 that he was given this additional charge; the first time was in January-February 1993, following the resignation of the then Governor of Himachal Pradesh.

5. Shri Surendra Nath was the recipient of Police Medal for meritorious service, and President's Police Medal for distinguished service. His interests were varied and embraced music and comparative religion. He had deeply imbibed our ancient scriptures, especially the works of the Sikh Gurus. He rendered into English Guru Gobind Singh's 'Jaap Sahib'.

6. In the tragic death of Shri Surendra Nath, the country has suffered an irreparable loss. He will long be remembered for his devoted and selfless public service, especially in the State of Punjab.

K. PADMANABHAIAH, Home Secy.